पद १३५

(राग: परज - ताल: धुमाळी)

पाहा पाहा आमचा खेळ। नाहीं विकार वृत्ति मळ॥धु.॥ रज तम (तामस) सान्विक वृत्ति। आत्मतेजीं होती जाती॥१॥ पूर्ण शक्ति नाटकी आत्मा। स्वप्नसृष्टी याचा महिमा॥२॥ क्षण अनंत युगसें भासे। माया मोह शक्ति विलासे॥३॥ दूर समीप रविमंडळ। कांच मणि दावी खेळ॥४॥ स्थिरचंचल विकार भास। विद्या अविद्या चित्र विलास॥५॥ अभेदात्मक प्रत्यय दावी। अनंत चिच्छक्ति लाघवी॥६॥ अहं प्रकाश स्फुरण शक्ति। स्थिर चंचल भासवी वृत्ति॥७॥ स्थिर दावी या चंचला। चंचलीं चंचला नाहीं थारा॥८॥ एक निश्चल चिन्मार्ताण्ड दावी सप्रपंच थोतांड॥९॥